कवि रहीम के नीति के दोहों में व्यवहारिकता

डॉ.रविंद्रनाथ माधव पाटील
डॉ. खत्री महाविद्यालय तुकूम चंद्रपुर
गोंडवाना विद्यापिठ गडचिरोली म.रा.
मो.नं.9850290531 / 8007150736
Emil ID -avindranathpatil@gmail

सारांश :

हिन्दी साहित्य के इतिहास में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक संत साहित्य का अतूलनीय योगदान रहा है, जो आज भी प्रासंगिक है। जिसमें संत कवि रहीम का नाम प्रमुखता से लिया जाता सकता है। रहीम के दोहे उनके जीवन के अनुभवजन्य भण्डार हैं। हिन्दी साहित्य में रहीम के दोहों ने उनका नाम अजरामर कर दिया है। जिस तरह तुलसीदास जी के दोहें और चोपाइयां, कबीर के दोहे, सुरदास, मिरा के दोहे पद, ज्ञानेश्वर, तुकाराम, तुकडोजी महाराज, गाडगें बाबा आदि समाज सुधारों के मानविय आचरण व परिवर्तन से भरे इनके दोहे है। जो जनता के होठों पर निवास करते है। रहीम के दोहें इनके जीवन कार्य एवं स्वानुभवों पर आधारित है। रहीम के दोहे केवल हृदयस्पर्शी ही नहीं हदय पर चिर अंकित, कभी न मिटने वाली अमिट छाप है।

*''इस युग में जहॉ सूर और तुलसी जैसे सूरज–चॉदउदय हुए, वहॉ रहीम भी हमारी कविता के उन्नायक बनें। उनकी हिन्दी कविता कितनी चुभती हुई है। यह इसी से मालून होता है कि उनके दोहे तुलसी की चौपाइयों की तरह लोगों के मुख पर चढेंह ुए है। उनके एक–एक दोहे में गागर में सागर की तरह गम्भीर अर्थ और अनुभव भरा होता है। उनकी कविताओं में सांम्प्रदायिक संकीर्णता की गंध नहीं मिलती।''**1** कवि रहीम ने अपने अनुभवजन्य विचार दोहों के रूप में जनसामान्य के विकास के लिए प्रकट कियें। रहीम के नीति संबंधी दोहे उपदेश के साथ जीवन के किसी गहरी अनुभूति के रस से लबालब भरे हुंए,है। जो आज भी अनुकरणीय, एव व्यवहारोपयोगी है। जो हिन्दी साहित्य संसार की अनुपम नीधि है। जिससे सभी का सुधार एवं विकास संभव है।*

बीज शब्द : *भावुकता, स्वानुभूति, मार्मिकता, भक्ति, नीति, प्रेम, श्रृंगार, सिधे–सच्चे।*

प्रस्तावना :

रहीम जी हिन्दी संत साहित्य के लोकप्रिय कवि है। 1556–1627 ई. इनका जीवनकाल है। जो अकबर के संरक्षक और प्रधानमंत्री बैरमखॉ के पुत्र थें। वे हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, अरबी, फारसी, तुर्की, भाषा के भी ज्ञाता थे। भ्रमण प्रवृत्ति से संपन्न होने के कारण उनमे अनुभवन जन्य ज्ञान के साथं भावुकता, मर्मज्ञता, मानवता आदि गुण थे। संत कबीर, तुलसीदास के समकक्ष हिन्दी भाषा–भाषी क्षेत्र में रहीम ही सबसे लोकप्रिय कवि दिखाई देते है इनकी लोकप्रियता का कारण इनके दोहों मे व्यक्त व्यावहारिकता है। आधुनिक युग में उन विचारो की प्रासंगिकता है। जीवन की यथार्थ एवं मार्मिक अनुभूति से पूरिपूर्णता इनकी खास विशेषता है।

''रहीमजी के दोहों में भक्ति, नीति, प्रेम लोकव्यवहार, आदि का बडा सजीब हुआ है। कहा जाता है कि उन्होने बरवै जैसे लघुत्तर छंद का आविष्कार भी किया है। बरवै छन्दों मे उन्होंने भक्ति और श्रृंगार की भावना को प्रधानतया चित्रिण्त किया है। मुसलमान होते हुए भीं धार्मिक कट्टरता का उनमे लेश भी न था। एक आस्थावान हिन्दू के समान इन्होंने राम, कृष्ण, शिव, गंगा आदि कें प्रति भी अपनी भक्ति–भावना को निवेदित किया है। ब्रज और अवधि दोनों ही भाषाओं में उनकी कविता सजीव बन पडी है। सरल और सुबोध भाषा के कारण वे सामान्य जनता में भी प्रिय बन सकें।''**2**जन सामान्य के लिए आज भी व्यवहार में उपलब्ध जीवनानुभव से परिपूर्ण दोहों में व्यक्त विचार इनके सर्वागिण व्यक्तित्व को प्रकट करते है।

कवि रहीम के नीति के दोहों में प्रासंगिकता

1. जीवन में अच्छे बूरे की, शत्रु–मित्र की पहचान हो।

कहि रहीम संपति सगे, बनत कहत बहु रीत।
बिपत्ति कसौटी जे कसे, तई सांचे मीत ।।1।।

सच्चे मित्र की पहचान का उपाय बताते हुए रहिमदास जी कहते है कि लोग अनेक प्रकार से और विविध रीति से धन के साथी बन जाते है किन्तु संकट के समय में जिनकी कसौटी की जा चुकी है। वे ही सच्चे मित्र होते है। आज अनेक लोग शत्रु–मित्र की पहचान न होने से धोका खाकर पछताते रहते है।

2. देने की प्रवृत्ति हो। दाता का महत्व निरंतर बना रहता है, विपरित परिस्थिति में भी वह कम नहीं होता।

रहीमन दानि दरिद्र तर, तउ जांचिबे जोग। जों
सरितन सूखा परें, कुवां खनावत लोग।।2।।

दानी दरिद्र भी हो जाय, तो भी उससे ही मांग की जाती है। वहीं सच्चा दान दे सकता है। उसी प्रकार नदी जब सूख जाती है तो भी लोग उनके ही तल में कुएँ खूदवातें है। क्योंकि वही से पानी प्राप्त किया जा सकता है। दान देने से मन को परम् शांति और समाधान प्राप्त होता है। याचक के मन में हमारे प्रति अच्छी भावना का उदय होता है। और हम अनेक समस्याओं से बचते है।

3. किसी से भी किसी भी प्रकार का भेदभान ना करें जीवन में छोटे बडे सबका महत्व होता है। सबकी अपनी अपनी अलग अलग किमत और महत्व होता है। जो काम वह कर सकता है, दूसरा कोई नहीं कर सकता।

रहिमन देख बडेन को, लघु न दीजिये डारि। जहॉ
काम आवै सुई, कहा करें तरवारि।।3।।

कवि रहीम कहते है, कि बडों की ओर देख कर हमने छोटों का साथ छोडना नहीं चाहिए, क्योंकि जहॉ सुई का काम होगा, वहॉ तलवार कुछ काम में नहीं आ सकती। सुई दो कपडों को जोडती है। तलवार से वस्तुएं काटी जाती है। कई बार छोटों का काम बडों से नहीं हो सकता। जिस प्रकार बडों का काम छोटे नहीं कर सकते। उसी प्रकार छोटों का काम बडें नहीं कर सकतें।

नैन सलोने अधर मधुर, कहु रहीम घटि कौंन। मीठो
भावै लौन पर, अरू मीठे पर लौन।।6।।

रहीम कहते है, कि नायिका की ऑखे सलोनी अर्थात नमकीन है और होंठ मधुर है। दोनों में कोई किसी से कमतर नहीं बल्कि दोनों ही शोभादायक है। मीठें अधरों पर नमकीन नयन प्रीतिकर है और नमकीन नयनों पर अधरों की मिठास। दोनों भी अपनी अपनी जगह महत्वपूर्ण है। इस प्रकार जीवन में कभी भी किसीकी भी जरूरत पड सकती है। सब काम के है। सबका अपना विशेष महत्व है। कोई कम नहीं कोई ज्यादा नही। यहा समानता की भावना की ओर इंगित किया है।

3. किसी बात की अति ना करें।

रहिमन अति न कीजिये, गहि रहिये निज कानि। सहिजन
अति फुले तउ, डार–पात की हानी।।4।।

कवि रहीम मानव को सुझाव देते है, कि जीवन जीते समय किसी भी बात की अति नहीं करना। अति के बुरे परिणाम बहुत होते है। सहजन वृक्ष अत्याधिक मात्रा में फलता है जिससे वह स्वयं की ही डालियॉ और पत्तियों को नुकसान पहुंचाता है।

धुर धरत निज सीस पर, कहु रहीम किहिं काज। जिहि
रज मुनि पतिनी तरी, सो ढूँढत गजराज।।5।।

हाथी अपनी सुंढ से मिटटी को अपने सिर पर डाल रहा है, वह हाथी भी गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या की तरह मुक्ति पा सकें। इस कुडं में गजराज भी अपनी मुक्तिदायिनी कुंड को ढूंढ रहा है। जिससे किसीको फायदा हो सकता है, सब उसीसे अपेक्षा करते है और उसीसे ही अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कुछ भी करने के लिए तत्पर रहते है। जिससे संक्षम, संपन्न वस्तुओं को हानी उठानी पडती है।

4. अपना स्वभाव उत्तम अर्थात अच्छा हो।

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।7।।

कवि रहीम जी कहते है, कि जो व्यक्ति यथार्थ में उत्तम स्वभाव का होता है, उसका स्वभाव कुसंग से भी नहीं बदलता। जैसे चन्दन के वृक्ष पर चाहें कितने ही जहरिलें सांप लिपटे रहें फिर भी सांपों के विष का उस चंन्दन वृक्ष पर कोई भी बुरा प्रभाव नहीं पडता। चाहें कितने ही जहरिलें सांप उस चंन्दन वृक्ष क्यों न लिपटे रहें चंन्दन की सुगंध, शितलता आदि जैसी बनी रहती है। उसकी कभी हानी नहीं होती

5. धैर्य धारण कर, स्वयं के कार्यो का नीत आत्मपरिक्षण करना चाहिए।

अच्छे और बूरे गुण–दूर्गून धीरे धीरे बढते और घटते जाते है। इनपर हमेंशा ध्यान रखना चाहिए। अर्थात हमें अपने कर्मो का निरंतर आत्मपरिक्षण करके उसमें सुधार करते रहना जरूरी है। जन्म से कोई भी बूरे और अच्छे गुणों को लेकर नहीं आता उसे वह इस संसार से ही अपनाता है। और अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए व्यवहार में अपनाता है और पालता है। समय आने पर सबको अवसर और इच्छित वस्तु मिलती है।

ससी, संकोच, साहस, सलिल, मान, स्नेह रहीम।।
बढत–बढत बढि जात है, घटत–घटत घटि सीम।। 8।।

कवि रहीम कहते है कि चंद्रमा, संकोच, साहस, जल, सम्मान, और स्नेह ये सब ऐसे है, जो बढते–बढते ही बढ जाते है, और घटते–घटते घटने की सीमा को छू लेते है। धैर्य धारण करना आवश्यक है।

6. जनमत, कभी किसी के साथ नहीं रहता। इसिलिए पद, प्रतिष्ठा, संपत्ति का अभिमान ना करें

यह रहीम निज संग ले, जनमत जगत न कोय।। बैर
प्रीति अभ्यास जस, होत–होत ही होय।।9।। बैर,

प्रीति, अभ्यास और यश इनके में कोई भी जन्म नहीं लेता। ये सारी चीजें तो धीरे–धीरे ही हमारे जीवन में प्रवेश करती है। हम ही इसका अपने स्वार्थ के लिए स्वागत करते है। हमें स्वयं पर नियंत्रण रखना बहुत जरूरी है।

7. स्वार्थ का त्याग करना चाहिए। अति

स्वार्थी मानव पशु से भी गया बीता होता है। वह सहजता से अपना स्वार्थ नहीं छोडता। जिसका उदाहरण हम कोरोना काल में देख चुके है। हमारे देश में अरब पतियों के पास, पंजीपतियों के पास, उद्योगपतीयों के पास मंदीरों में अरबों खरबों धन पडा हुआ है। जनता तडप–तडप कर मर रही थी। देश दिन–ब–हिदन ऋण के बोझ से दबा हुआ है। विदेशी कंपनीयों का, देशों का अधिपत्य हमारे देश पर बढते जा रहा है, लेकिन इन्हें देश जनता आदि किसीसे भी कुछ लेना देना नहीं है। यह मानव न होकर पशु से भी गए बीते है। यही रहीम जी भी बताना चाहते है।

नाद रीझी तन देत मृग, नर धन हेत समेत।।
ते रहीम पसु तें अधिक, रीझेहुं कछु न देत।।10।।

गान अर्थात गीत के स्वर पर रीझ कर मृग खुदको शीकारी के हाथों सौंप देता है। और मनुष्य धन–दौलत पर प्राण गवां देता है। परंन्तु वे लोग पशु से भी गये बीते है, जो रीझ जाने पर भी कुछ भी नहीं देतें। स्वार्थ के कारण अति भावुकता, उत्साह से हम अपना ही नुकसान कर बैठते है।

8.अपनों को किसी छोटे–मोटे कारण वश घर से बेघर ना करे, निष्कासित ना करें।

अपनों को स्वयं से अलग ना करें उसे समझा–बूझाकर अपने साथ ही बनाये रखें। उसे घर से अपनों से दूर करने पर उसे बूरा लगेगा, दुःख होगा और उस कारण को वह बाहर प्रकट करेगा। उससे अपना घर का सदस्य तो बाहर गया ही साथ ही घर की बात भी घर में ना रहीं वह भी सार्वजनिक हुई जिससे दोनों का नुकसान होगा और तीसरे का फायदा होगा । ऐसा व्यवहार हमें नहीं करना चाहिये। साथ ही जब कोई हमारा अपना प्रियजन हमसे रूठ जाए तो उसे मना लेना चाहिए, भले ही हमें उसे सौ बार ही क्यों ना मनाना पडे। प्रीयजन को अवश्य मना लेना चाहिए। वह हमारे लिए मोतीयों की माला के समान होते है। हमारी इज्जत, मान, मर्यादा, शान होते है।

रहिमन अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रकट करेई। जाहि
निकारौ गेह ते, कस न भेद कहि देई।। 11।।
कवि रहीम कहतें है कि आंसू नयनों से बहकर मन का दुःख प्रकट कर देते है। सत्य ही है कि जिसे घर से निकाला जाएगा वह घर का भेद दूसरों से कह ही देगा।
रूठे सुजन मनाइए, जो रूठें सौं बार। रहिमन
फिर फिर पोहिए, टूटे मुक्ताहार।।15।।

जो अच्छे और उत्तम स्वभाव के व्यक्ति होते है वह अगर हमसे बार बार रूठ जाए तो भी हमनें उन्हें मनाना चाहिए। क्यों कि वह मोतियों के समान मूल्यवान होते है। जिनके बनें रहने से ही मोतियों की माला की शोभा बनी रहती है। उसी प्रकार व्यवहार में संबंध, सामाजिकता बनी रहती है। जो जीवन में मुक्ताहार के समान है।

9.कटू वचन बोलने वालों के लिए सजा मिलती ही है।

खीरा
सिर से काटिए, मलियत लौन बनाय। रहिमन
करूए मुखन को, चहियत इहै सजाय।।12।।

खीरे का अर्थात ककडी का कडूवापन दूर करने के लिए उसके उपरी सिरे को काटने के बाद नमक लगा कर घिसा जाता है। जिससे उसको कडूवापण दूर होता है। कडूवे मुंह वाले के लिए, कटु वचन बोलने वाले के लिए यही सजा ठीक है।

10.मन की सच्ची भावना को छिपाकर बनावटी पन से बचना चाहिए–

जो छुपाने से भी छुपाई नहीं जा सकती। जब सामने आती है तो हमारी असलियत खूल जाती है। हमें शर्मिंदा होना पडता है।

खैर, खून, खॉसी, खुसी, बैर, प्रीति, मद–पान। रहिमन
दाबे ना दबै, जानत सकल जहान।।13।।

कवि रहीम कहते कि सारी संसार जानता है कि खैर अर्थात कत्थे का दाग, खून अर्थात किसी की हत्या, खॉसी अर्थात जोर जोर से खॉसना, खुशी अर्थात किसी बात को लेकर खुश होना, दुश्मनी अर्थात किसी के प्रति मन वैर की भावना, प्रेम अर्थात मन में किसीसे के प्रति प्रेम, मदपान अर्थात मदिरा या किसी प्रकार का नशा ये चीजें ना तो दबाने से दबती है और ना ही छिपाने से छिपाया जा सकता है। दिखावटी पण प्रदर्शन से हम अपनी कमजोरीयों को थोडी देर छूपा सकते है, हमेशा के लिए नहीं।

11. जीवन में सुख–दुःख मान अपमान सब सहन करना पडता है।

जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह। धरती
पर ही परत है, शीत, धाम, औ मेह।।14।।

कवि रहीम कहते है कि जैसी भी मार इस देह पर पडती है–सहन करनी ही है। इस धरती पर ही सर्दी, गर्मी और वर्षा पडती है। अर्थात जैसे धरती शीत, धूप, और वर्षा सहती है। उसी प्रकार मानव शरीर को इस संसार में सुख–दुःख सहना करना ही पडता है। जो इस संसार में सबकों भूगतना है।

12. कहने के लिए कुछ न रहने पर केवल बातें बनाने से काम चल जाता है।

थोंथें बादल क्वॉर के, ज्यों रहीम घहरात। धनी
पुरूष निर्धन भये, करै पाछिलि बात।।16।।

कवि रहीम कहते है कि क्वॉर मास में पानी से खली बादल जिस प्रकार गरजते है, उसी प्रकार धनी मनुष्य जब निर्धन हो जाता है, तो अपनी बातों का बारबार बखान करता है।

13. मधुर वचन हो। हमारी भाषा सौम्य, मिठी, आदरयुक्त, सम्मानजनक हो।

दोनों रहिमन एक से जो लौं बोलत नाहिं।
जन परत है काक पिक, ऋतु बसंत के माहि।।17।।

कवि रहीम कहते है, पेड की डाल पर बैठा कौआ और कोयल दोनों समान दिखाई देते है, जब बसंत ऋतु आता है, तब उनकी आवाज से उनके स्वभाव और व्यवहार का पता चलता है। विशेष अवसर आने पर ही मानव का स्वभाव, व्यवहार, विचार का पता चलता है। मधुर वचन हृदय को शितलता देते

है।

14. मनुष्य को सोच समझकर बर्ताव करना है।

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय। रहीमन
फाटे दूध को, मथे न माखन होय।।18।।

मनुष्य को सोच समझकर बर्ताव करना चाहिए। क्योंकि किसी कारणवश यदि बात बिगड जाती है तो फिर उसे बनाना कठिन होता है। जैसे यदि एक बार दूंध फट गया तो लाख कोशिश करनें पर भी उसका मक्खन नहीं हो सकता।

15. संज्जन लोग धन संचय खूद के लिए न करके परहित के लिए करते है।

तरू वर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान। कहि
रहीम परकाज हित, संपति संचहि सुजान।।18।।

परोपकारी लोग परहित के लिए ही संपत्ति को संचित करते है जैसे वृक्ष फलों का भक्षण नहीं करतें है और ना ही सरोवर जल पीते है बल्कि इसका सृजन और संचय दूसरों के हित के लिए ही करते हैं।

16. गरीबों की कोई किमत नहीं होती।

दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखैं न कोय। जो
रहीम दीनहिं लखैं, दीनबन्धु सम होय ।।20।।

गरीब सबकी और आस भरी दृष्टी से देखते है, गरीब को कोई नहीं देखता वह किसीको दिखाई नहीं देता सब लोग गरीबों को नजर अंदाज करते है जो गरीब को प्रेम की, मानवता की नजर से देखता है वही दीनबन्धु अर्थात भगवान के समान होता है।

17. हरेक ने अपनी स्वाभिमान को अबाधित रखना चाहिए। स्वाभिमान के सिवाय सब व्यर्थ है।

मानव ने जीवनयापन करते वक्त पानी अर्थात अपने स्वाभिमान की रक्षा हर हालत में करना चाहिए। जब उसका स्वाभिमान नष्ट होता है तो उसका अस्तिव ही मीटता है।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सुन। पानी
गए न उबरें, मोती मानुष चुन।। 21।।

कवि रहीमजी के उपरोक्त दोहों में जीवन की सच्ची परिस्थितियों का, मानव के वास्तविक व्यवहारों का मार्मिक अनुभव है। ''कवि रहीम का हृदय, द्रवीभूत होने के लिए, कल्पना की उडान की अपेक्षा नहीं रखता था। वह संसार के सच्चे और प्रत्यक्ष व्यवहारों में ही अपने द्रवीभूत होने के लिए पर्याप्त स्वरूप पा जाता था।''3 कवि रहीम को मानव जीवन के अनुभवों के मार्मिक पक्ष को अपनाने की, सभी मानवों ने अपने जीवन में अपने विकास के लिए इसे अपनाना चाहिए ऐसी एक अदम्य उत्सुकता दिखाई देती है।

निष्कर्ष :

हिन्दी काव्य जगत में रहीम में नीति के दोहे आज भी मानव व्यवहार में अनुकरणीय एवं लोकोपयोगी है। कवि रहीम के काव्य मे नीति, भक्ति और श्रृंगार का त्रिवेणी संगम है। लेकिन हिन्दी साहित्य में रहीम के नीति के दोहों की संख्या अधिक है, और उनके यही दोहे जनसामान्य में प्रसिद्ध भी है। जो अनके विषयों के ज्ञान से परिपूर्ण है। इनके दोहे के शब्द नपे–तुले और भाव–प्रभावपूर्ण है। जिनमें मानव संसार के जीवन का बडा गहरा और सच्चा अनुभव समाविष्ठ है। जो आज भी जीवन में अनुकरणीय है। क्योंकि रहीम जी अपने जीवनकाल में सभी प्रकार के मनुष्यों के संम्पर्क में आये थे। जिससे उनके दोहों में भी वह सुदीर्घ अनुभव है, जिससे मानव को अपने जीवनयापन में सहायता हो और सबका कल्याण हो। रहीम के दोहों में अतुलनिय भावुकता, जीवन सार, व्यवहारिक अनुभव, मानव का आचार–विचार–व्यवहार, विवेक, तर्कबुद्धी को एक प्रकार की उत्साहवर्धक चेतना मिलती है। जो एक कवि हृदय के साथ ही अद्भुत संवेदनशीलता, सद्मानव की स्वाभाविक, वास्तविक ओर मार्मिक अभिव्यक्ति है। जिसे रहीम ने अपनी सीधी, सरल, स्पष्ट सामान्यजन को समझ में आनेवाली सरस भाषा में उजागर किया है। रहीम के दोहे को आधुनिक युग के मानव ने आज भी अपने जीवन और व्यवहार अपने आचार विचार और व्यवहार के विकास

के लिए अपनाना जरूरी है। जिससे उसका नुकसान न होकर उसे जीवन में कुछ–न–कुछ लाभ ही होगा। जो हिन्दी साहित्य की भी अमूल्य नीधि है।

संदर्भ :

- राहुल वाङः,मय–खण्ड दो जीवनी और संस्मरण जिल्द–2, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेटलिमिटेड 2/38, अंसारी रोड, दरियागंज नयी दिल्ली–110002, प्रथम संस्करणः 1994, पृष्ठ कं. 573
- हिन्दी काव्य सरिता–संम्पादक निर्मला गुप्ता–प्रकाशक युरेशिया पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.रामनगर, नई दिल्ली110055–पुनःमुद्रित 1990, पृष्ठ कं. 16
- हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ल–प्रकाशक प्रकाशन संस्थान 4715/21, दयानंन्द मार्ग, दरियागंज नयी दिल्ली 110002.–संस्करण सन 2005 ैठछ 81–7714–083–3 पृष्ठ 169.
- आधार ग्रंथ–हिन्दी काव्य सरिता–संम्पादक निर्मला गुप्ता–प्रकाशक युरेशिया पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि.रामनगर, नई दिल्ली110055–पुनःमुद्रित 1990, के 20 दोहे–पृष्ठ कं. 17, 18

Research Hub International Journal